नागार्जुन की काव्य–चेतना

दुंलारी कुमारी

अतिथि शिक्षिका, हिन्दी विभाग

आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में नागार्जुन जीवन और सृजन की एकता, व्यक्तित्व और कृतित्व की एकरूपता तथा सिद्धान्त और व्यवहार के समन्वय के एक उज्जवल उदाहरण हैं। नागार्जुन ने वही लिखा है, जो जीवन में अनुभव किया है और उन्होंने जो अनुभव किया उसे बेहिचक कह दिया है।

नागार्जुन जन कवि है। राष्ट्रकवि की राजकीयता ने उन्हें कभी आकृष्ट नहीं किया। वे राष्ट्र और जनता में काई फर्क नहीं मानते, इसलिए राष्ट्र की सही स्वतंत्रता का अर्थ है पूँजीवादी शोषण और दमन से जनता की स्वतंत्रता। राष्ट्र की शक्ति का मूल स्त्रोत है, जनता की शक्ति । देश को नव अपनिवेशवाद के चंगुल से मुक्त करना आधुनिक राष्ट्रीयता का एक रूप है। नव उपनिवेशवादी युद्ध–पिपासुओ को सम्बोधित कर ही कवि ने 'कैसा लगा तुम्हें.' शीर्षक कविता में लिखा हैः–

कैसा लगेगा तुम्हें।

जंगली सूअर यदि उधम मचाएँ

तहस–नहस कर डालें फसले

देखकर पदमर्दित उत्कट सुरभिवाली दुधिया बालें

देखकर भूलुंठित कुचली कनक मंजरियाँ।

टूट–टूक हो यदि हृदय लोक लक्ष्मी का

कैसा लगेगा तुम्हें।

नागार्जुन की ये पंक्तियाँ युद्धजन्य दर्द और शान्ति की अभिलाषा को जितनी उत्कटता से व्यक्त करती है, उतनी किसी दूसरे आधुनिक हिन्दी के कवि की कविताएँ नहीं कर पाती। लोक लक्ष्मी का टूटा हृदय वही देख सकता है जिसके पास मानवता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो। संकट को परखने की उनकी कसौटी अत्यंत संकीर्ण होती है। उन्होंने आधुनिक मानवता के संकट को सही मायने में देखा है।

नागार्जुन की कविताओं की भावभूमि वही है जो पीड़ित जनता की भावभूमि है। जनता की इस तबके की आवश्यकताएँ और आकांक्षाएँ उनके काव्य की विषय–वस्तु है। कवि की सृजन–प्रक्रिया अभिन्न रूप से सामाजिक समस्याओं से जुड़ी हुई हैं। वे उन्मुक्त हृदय और खुली दृष्टि से हर सामाजिक घटना को देखते हैं।

आज हमारा समाज भुखमरी, अकाल, दरिद्रता, बेरोजगारी, मँहगाई, मुनाफाखोरी, अशिक्षा एवं भ्रष्टाचार से पीड़ित है किन्तु इसी समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो ऐशो–आराम के साधनों एवं मौज–मस्ती के सामानों के साथ विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यही द्वन्द्व एवं अन्तर्विरोध आज का सामाजिक यथार्थ और मानवीय सत्य है। नागार्जुन की कविताएँ इस यथार्थ और सत्य को निर्भीकता और निर्ममता से व्यक्त करती है। आज का एक सत्य यह भी है कि अब मनुष्य जीवन की वर्तमान स्थिति की नियति को विवशता के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। वे नियति की दिशा बदल देने को तत्पर हैं और उसके लिए सक्षम भी हैं। नागार्जुन की काव्य–चेतना सत्य के इस रूप को भी आत्म–सात कर लेती है। वे वर्ग–सघर्ष के कवि हैं। उनका यह संघर्ष जीवन और चेतना दोनों ही स्तरों पर चलता है। वे इस संघर्ष को सामाजिक रूपान्तर की अवस्था तक शोषितों के विजय तक एवं वैज्ञानिक समाजवाद की स्थापना तक पहुँचाना चाहते है। उनकी यह सामाजिक चेतना इन पंक्तियों में देखी जा सकती हैः–

अधिकाधिक योग–क्षेम

अधिकाधिक शुभ–लाभ

अधिकाधिक चेतना

कर लूँ संचित लघुत्तम परिधि मे।

असीम रहे व्यक्तिगत हर्ष–उत्कर्ष;

अकेले ही जी लूँ सौ वर्ष।

यह क्योंकर होगा ?

नागार्जुन साहित्य को जनता के जीवन–संघर्ष का अभिन्न अंग मानते है। सामाजिक संघर्ष के प्रवाह से कटे हुए बुद्धिजीवियो को नागार्जुन एक श्रमजीवी की तुलना में किस दृष्टि से देखते हैं यह इन पंक्तियो मे व्यक्त हुआ हैः–

वे लोहा पीट रहे हैं,

तुम मन को पीट रहे हो;

वे पत्तर जोड़ रहे हैं,

तुम सपने जोड़ रहे हो।

उनकी घुटन ठहाको में घुलती है

और तुम्हारी घुटन।

उनींदी घड़ियो में चुरती हैं।

इन पंक्तियों से यह संकते मिलता है कि कवि श्रम की सार्थकता को स्वीकार करते ही हैं साथ ही सोद्देश्यता और उत्पादकता को सार्थकता का आधार भी मानते हैं। मनुष्य की प्रतिष्ठा के प्रति यह एक वैज्ञानिक और यथार्थवादी समझ है। उनका यथार्थवाद मनुष्य और समाज के अंतः सम्बन्ध की समझ से विकसित हुआ है। उपर्युक्त स्थापना की सच्चाई निम्नांकित पंक्यिों से प्रमाणित होती हैः–

कई दिनो तक चुल्हा रोया चक्की रही उदास,

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास,

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकिलयाँ की गश्त,

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद,

धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद,

चमक उठी घर–भर की आँखे कई दिनों के बाद,

कौए न खुजलाई पाँखे कई दिनों के बाद।

इन पंक्तियो द्वारा कवि ने मनुष्य के वास्तविक संकट को सामाजिक स्तर पर आत्मीयता से महसूस किया है। संकट इतना घनीभूत है कि चूल्हा–चक्की के पास कई दिनों तक कानी कुतिया निर्विघ्न सोयी रहती है। रोशनी नहीं जलने के कारण कई दिनों तक छिपकिलियों को भी निराहार रहना पड़ा एवं चूहों की भी हालत खराब रही। इसी से मनुष्य की भयावह और दर्दनाक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। बाद की चार पंक्तियों में घर में दाना आने के बाद की प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है।

आधुनिक हिन्दी कविता में नागार्जुन से बेहतर कोई व्यंग्यकार नहीं है, हालाँकि छायावादी कवियों में निराला एवं प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ अग्रवाल ने भी व्यंग्य लिखा है, लेकिन व्यंग्य की जितनी व्यापकता और गहरायी नागार्जुन ने प्रदान की है उतना किसी दूसरे ने नहीं। मैथिली में 'लिबर्टी मैया' और हिन्दी में 'आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी' उनकी उत्कृष्ट व्यंग्य कवितायें हैं। एक कविता में एक स्थल पर वह कहते हैं:–

भूखे भारत माता के सूखे हाथों को चूम लो

पद्मभूषणों, भारत रत्नों से उनके उद्‌गार लो

पार्लमेंट के प्रतिनिधियों से आदर लो, सत्कार लो

मिनिस्टरों से शेकहैंण्ड लो, जनता से जयकार लो

दायें–बायें खड़े हजारों अफिसरों से प्यार लो।

यह राजनीतिक व्यंग्य का अच्छा उदाहरण है जो रानी एलिजाबेथ के भारत आगमन के समय लिखा गया था। राजनीतिक व्यंग्य का एक और नमूना निम्नलिखित हैंः–

अभी–अभी उस दिन मिनिस्टर आए थे,

बतीसी दिखलाई थी, वादे दुहराये थे,

भाषा लटपटाई थी, नैन शरमाए थे,

छपा हुआ भाषण भी पढ़ नहीं पाए थे,

जाते वक्त हाथ जोड़ कैसे मुस्कुराए थे।

नागार्जुन का व्यंग्य बहुमुखी है। समाज का शायद ही कोई पक्ष उनकी दृष्टि से बच पाया हो । सामाजिक बिषमता, आर्थिक शोषण और भ्रष्टाचार आदि पर उनका प्रहार, उनकी प्रखर सामाजिक चेतना का परिचायक है।

भूखमरी के प्रश्न उठाने पर सरकार की ओर से दिये जाने वाले उत्तर को स्मरण कर उस व्यंग्य का निशाना निम्नांकित पंक्तियों में देखा जा सकता हैः–

मरो भूख से, फौरन आ धमकेगा थानेदार,

लिखवा लेगा घरवालों से, वह तो था बीमार।

अल्प सरकारी सहायता के साथ होनेवाले भ्रष्टाचार पर इन पंक्तियों द्वारा चोट की गई हैः–

दो हजार मन गेहूँ आया, दस गाँव के नाम

राधे चक्कर लगा काटने, सुबह से हो गई शाम

.....

सरकार गल्ला चुपके से भेज रहा नेपाल

अंदर टंगे पड़े है, गाँधी–तिलक–जवाहरलाल।

नागार्जुन का व्यंग्य सार्थक और सुनिर्दिष्ट है। जब वह वर्त्तमान व्यवस्था अथवा उसके किसी पुर्जे पर चोट मारते हैं तो उन्हें, यह पता है कि वर्त्तमान समाज की बीमारी क्या है और कहाँ है; तथा उसका विकल्प क्या है? यही कारण है कि नागार्जुन के व्यंग्य के प्रहार से मानवता के शोषक तिलमिलाते है। पूँजीवादी संस्कृति और व्यक्तिवाद के पोषक बेचैन हो जाते हैं।

नागार्जुन जब व्यंग्य की कटुता से मुक्त सहज मुद्रा में आते हैं तो सामान्य मनुष्य की तरह उन्हें भी प्रवास में प्रिय की याद आती है। इस प्रसंग में उनकी सुप्रसिद्ध कविता 'सिन्दुर तिलकित भाल' उल्लेखनीय है।

घोर निजन में परिस्थिति ने दिया है डाल।

याद आता है तुम्हारा सिन्दुर तिलकित भाल।

नागार्जुन 'सिन्दुर तिलकित भाल' को ही नहीं, बल्कि अपनी जन्मभूमि की पूरी संस्कृति को याद करते हैं। वे आधुनिक कविता के उन विशिष्ट कवियों में हैं जो कविता में अपने परिवेश और स्थानीय रंग को गहराई एवं मार्मिकता से व्यक्त करते हैं।

नागार्जुन ने आज के वर्त्तमान शासन को गाँधी जी के रामराज्य के स्वप्न के रूप में ग्रहण किया हे और उसका यथार्थ दृष्टि से चित्रण किया है। इसमें देशभक्त कवि की वेदना का स्वर ही प्रधान है। रामराज्य गाँधी जी की एक महान कल्पना थी। उसे इस प्रकार खण्डित होकर बिखरता देख कवि का हृदय अर्न्तव्यथा से भर गया है। इस व्यथा में एक चोट खाए हुए देशभक्त कवि की वेदना ही प्रधान है।

राम राज्य में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है,

सूरत शक्ल वही है रैया बदला केवल ढाँचा है,

नेताओं की नीयत बदली फिर तो अपने ही हाथों

भारतमाता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है।

प्रकृति भी उनकी दृष्टि का स्पर्श निखारती है। उनकी 'पूस मास की धूप सुहावन', 'बादल को घिरते देखा है', आदि कविताओं में प्रकृति की मनोरम छटाओं का वर्णन दर्शनीय है।

कविता में उनकी दृष्टि जनभाषा की ओर अधिक है। इसीलिए उनके काव्य की भाषा हिन्दुस्तान के किसान की तरह सीधी, देहाती, मुहावरों–लोकोक्तियों से युक्त तथा संघर्षशील मजदूर की भाँति स्पष्ट, व्यग्यात्मक और चोट करनेवाली है।

इस प्रकार नागार्जुन के कविता की केन्द्रीय प्रवृत्ति समाजवादी यथार्थवाद है और उनकी शिल्पगत तथा भाषागत विशिष्टता पर जनचेतना की अनिवार्य छाप है। जनचेतना उनके यथार्थवाद का रूप निर्धारित करती है और वही उनके काव्यगत उपादनों को संगठन देती है।

संदर्भ सूचीः–

1 नागार्जुन की कविता– अजय तिवारी

2 प्रगतिवादी काव्य साहित्य– डॉ0 कृष्णलाल हंस

3 नागार्जुन मूल्यांकनः पुनर्मूल्यांकन – सं0 परमानन्द श्रीवास्तव

4 नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ– स0– डॉ0 नामवर सिंह

5 यायावर कवि नागार्जुन अंतः अनुशासनीय मूल्यांकन– डॉ0 वीरेन्द्र सिंह

6 ऐसे भी हम क्या – नागार्जुन

7 युगधारा – नागार्जुन

8 हजार–हजार बाहोंवाली – नागार्जुन